IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

प्रवासी हिंदी साहित्य

Research scholar

Ekta Kedia Prof. (Dr.) Mahesh M. Patel

प्रवासी साहित्य वह साहित्य है जो किसी देश या क्षेत्र से बाहर रह रहे लोगों द्वारा लिखा जाता है। प्रवासी साहित्य में अक्सर प्रवास की चुनौतियो, संस्कृतियों के बीच टकराव और नए परिवेश में एक पहचान बनाने वाले विषयों को चित्रित किया जाता है। हिंदी साहित्य में प्रवासी साहित्य का उल्लेख मिलता है। 19वीं शताब्दी में कई भारतीयों ने अंग्रेजी शासन के विरोध में या उससे और बेहतर जीवन की तलाश में भारत छोड़ दिया। इन प्रवासियो ने अपने अनुभव को हिंदी में लिखा जिससे हिंदी साहित्य में प्रवासी साहित्य की एक शुरुआत हुई।

20वीं शताब्दी में हिंदी प्रवासियों की संख्या में वृद्धि हुई। इस दौरान कई हिंदी साहित्यकारों ने विदेशों में बसाने और वहां की संस्कृतियों के साथ घूलमिलने के अपने अनुभव को लिखना शुरू किया। इन साहित्यकारों में कुछ प्रमुख साहित्यकार है:

कृष्णलाल बिहारी

कमल किशोर गोयनका

तेजेंद्र शर्मा

मधुसूदन मिश्रा उषा किरण

इन साहित्यकारों ने अपने लेखन में प्रवास के विभिन्न पहलुओं को चित्रित किया है। उन्होंने भारत और विदेशों के बीच संस्कृतियों के टकराव, प्रवासियों की पहचान की खोज और नए परिवेश में एक जगह बनाने के विषय को उठाया है।

भारत से बाहर गए और वहीं पर बसे लोगों का साहित्य है। मॉरिशस, फिजी, सूरीनाम आदि देशों में प्रवास करने वाले भारतीयों की हिंदी भारत की परिनिष्ठत खड़ी बोली हिंदी नहीं है। उनकी हिंदी में भोजपुरी, अवधि आदि बोलियों का अच्छा - खासा प्रभाव है। अलग-अलग देशों में इसका अलग-अलग नाम भी है। "फिजी में यह फिजिषत, सूरीनाम में सरनामी तथा दक्षिण अफ्रीका में नेताली के नाम से जानी जाती है।"१ प्रवासी हिंदी साहित्य हिंदी साहित्य की एक महत्वपूर्ण विधा है। यह साहित्य हिंदी साहित्य को समृद्ध और विविध बनता है। यह साहित्य भारतीय संस्कृति और विरासत को दुनिया भर में फैलाने में भी मदद करता है। इसी भारतीय एकता और अस्मिता का एक सजग पहलू प्रवासी साहित्य है। इस साहित्य ने केवल देश में ही नहीं अपितु दुनिया के अनेक देशों में भारतीय संस्कृति और सांस्कृतिक पहचान की खुशबू बिखेरी है। विश्व के अनेक देशों में भारतवंशी हिंदी, हिंदू और हिंदुस्तान की ध्वज पताका फहराने में लगे हैं। साहित्य के माध्यम से उनकी राष्ट्र और संस्कृति संबंधी सेवाएं सामने आ रही है। इससे न केवल भारत को विदेशी संस्कृति का ज्ञान हो रहा है बल्कि विश्व भी भारतीय - संस्कृति से परिचित हो रहा है। साथ ही हिंदी भाषा और साहित्य का निरंतर प्रचार - प्रसार बढ़ रहा है। जिससे हिंदी भाषा राष्ट्र की देहली लांघकर अंतर्राष्ट्रीय भाषा बनने की राह पर अग्रसर है। "हिंदी के इस प्रवासी साहित्य के इस सर्वेक्षण से हम कुछ महत्वपूर्ण निष्कर्ष तक पहुंच सकते हैं। इस प्रकाशित साहित्य ने हिंदी को वैश्विक रूप प्रदान किया है और अब हिंदी का कभी सूर्यास्त नहीं होगा। हिंदी का प्रवासी साहित्य भारतेतर देशों को भारत से जोड़ने का एक सेतु बनाता है जिसके मूल में भारतवासियों का स्वदेश - प्रेम, भाषा - प्रेम, संस्कृत - प्रेम के साथ उनकी सालंग्रता सहभागिता एवं सहयोग अटूट रूप में संबंध है। यह सेतु विश्व - व्यापी हिंदी साहित्यिक समाज का निर्माण करता है। विभिन्न देशों के हिंदी लेखक एवं हिंदी समाज भारत के हिंदी समाज से जुड़ते हैं और परस्पर एक - दूसरे के निकट हिंदी - विश्व को सबल एवं स्थायित्व प्रदान करते हैं।"२ प्रवासी हिंदी साहित्य में कविताएं, उपन्यास, कहानी, नाटक, एकांकी, महाकाव्य, खंडकाव्य एवं आत्मकथा आदि का सर्जन हुआ है। प्रवासी साहित्यिकारो का साहित्य भी प्रशंसनीय है। इन साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं द्वारा नीति - मूल्य मिथक इतिहास

सभ्यता के माध्यम से सुरक्षित रखा है। हिंदी को प्रभावित रखा है, जिंदा रखा है। प्रवासी साहित्य के साहित्यकार हैं हरिशंकर आदेश। उनकी लगभग तीन सौ से अधिक रचनाएं प्रकाशित हुई है। वे 1966 से 1976 ई तक वेस्टइंडीज में अपने कार्यकाल के दरमियान उन्होंने अवलोकन किया की चर्चा द्वारा वहा बसे हुए भारतीयों (जिन्हें वर्षों पहले ब्रिटिश सरकार मजदूर बनाकर ले गए थे) धर्मांतरण के लिए दबाव डाले जा रहे थे। महाकवि आदर्श ने इस बात को गंभीरता से लिया। उन्होंने इसे रोकने के लिए वहां के निवासियों को प्रशिक्षित किया। आदेश जी के कारण वहां के लोगों को राहत मिली। उन्होंने वेस्टइंडीज में 'भारतीय विद्या संस्थान' की स्थापना की। प्रवासी हिंदी साहित्य में आदेश जी का नाम अग्रणी है।

साहित्य के सृजनात्मक लेखन के कार्य में राज हीरामन, इंद्रदेव भोला, सूर्यदेव सिबोरत आदि हिंदी साहित्य सृजन से जुड़े हुए हैं। हिंदी साहित्य के माध्यम से भारतीय संस्कृति के प्रचार एवं प्रचार का सर्वाधिक श्रेय प्रवासी हिंदी लेखकों को जाता है। भारतीय संस्कृति पाश्चात्य संस्कृति से भिन्न है। भारतीय धार्मिक आचार - विचार, भाषा ,रीति - रिवाज पाश्चात्य संस्कृति हिंदी साहित्य की एक कड़ी बन चुकी है। इस विषय में डॉ. कमल किशोर गोयनका जी ने कहा है - "हिंदी के प्रवासी साहित्य हिंदी साहित्य की एक सशक्त धारा बन चुकी है और इसे साहित्य की प्रमुख धारा में सम्मानपूर्ण स्थान देना चाहिए। हिंदी के प्रवासी - साहित्य के प्रति गोविंद जी की प्रतिबद्धता अब जगजाहिर है। प्रेमचंद के बाद प्रवासी साहित्य ही इनका कम - क्षेत्र है। इसकी कहानी गोयनका जी की पहली मॉरीशस यात्रा 1980 से शुरू होती है ,तब गोयनका जी भारत सरकार का प्रतिनिधि बनकर 'प्रेमचंद शताब्दी समारोह' में भाग लेने के लिए मॉरीशस गए थे। वहां से लौटते समय उन्होंने मॉरीशस तथा प्रवासी साहित्य पर काम करने का संकल्प लिया और ये पुस्तके प्रकाशित की:

. अभिमन्यु अनत: एक बातचीत १९८५

. अभिमन्यु अनत: समग्र कविताएं १९९८

. अभिमन्यु अनत: प्रतिनिधि रचनाएं १९९९

. मॉरिशस की हिंदी - कहानियां २०००

. बृजेंद्र कुमार भगत मधुकर काव्य - रचनावली, २००३" ३

प्रवासी भारतीयों ने हिंदी की स्थानीय शैली का विकास किया है। प्रवासी भारतीय लेखकों के समक्ष आज कई चुनौतियां भी है जो यथार्थ में प्रवासी होने के कारण उसके प्रवासी नियति से जुड़ी है। प्रवासी भारतीयों की भाषा के संबंध में आज एक बड़ी चुनौती है कि प्रवासी भारतीय हिंदी भाषा बोलने के साथ ही हिंदी को देवनागरी में लिख भी सके। लिपि के बिना भाषा - ज्ञान अधूरा है ही साथ ही वह भाषा जाननेवाले के अंतर्मन में आत्मविश्वास भी नहीं जगा पता है। फिजी, सूरीनाम आदि देशों में हिंदी आज भी रोमन लिपि में ही लिखी जाती है। यही स्थिति अमेरिका, इंग्लैंड, जर्मनी आदि देशों में बसे प्रवासी भारतीयों की भी है। जो हिंदी तो बोलते हैं पर देवनागरी के स्थान पर हिंदी रोमन में लिखते हैं।

हिंदी का प्रवासी साहित्य हिंदी साहित्य का अंतरराष्ट्रीय स्वरूप प्रस्तुत करता है। " जिस तरह हिंदी में भारतेंदु युग, द्विवेदी युग, छायावाद , प्रगतिवाद , प्रयोगवाद, नई कविता , दलित साहित्य, स्त्री विमर्श आदि का स्वतंत्र अस्तित्व है। उसी तरह प्रवासी हिंदी साहित्य की भी आज अपनी खास पहचान है। 21वीं शताब्दी के शुरुआत में आधुनिक साहित्य के अंतर्गत प्रवासी हिंदी साहित्य के नाम से एक नए युग का प्रारंभ हुआ संख्या - बल की दृष्टि से हिंदी आज विश्व की दूसरी प्रधान भाषा है।"४

निष्कर्ष: प्रवासी हिंदी साहित्य का श्रेय उस विशाल प्रवासी समुदाय को भी जाता है जो भारत के अन्य देशों में जाकर बसने के बावजूद हिंदी को अपनाए हुए हैं । इन देशों में रचा जा रहा साहित्य उस देश से हमें परिचित कराता है। साथ ही उनकी भाषा से शब्द में ग्रहण कर रहा है। परिणामत: हिंदी का भी एक नया स्वरूप विन्यास विकसित हो रहा है जो हिंदी में लिखे जा रहे साहित्य को एक नई पहचान के द्वारा देखा जा रहा है।

संदर्भ ग्रंथ:-

१. विमलेश कांति वर्मा : फिजी में हिंदी स्वरूप और विकास, पीताम्बर प्रकाशन, नई दिल्ली २०००

२. कमल किशोर गोयनका : प्रवासी साहित्य जोहांसबर्ग से आगे, यश पब्लिकेशन प्रथम संस्करण - २०१५, पृष्ठ संख्या -१२

३. कमल किशोर गोयनका: हिंदी का प्रवासी साहित्य खंड ३, यश पब्लिकेशन नई दिल्ली प्रथम संस्करण - २०१७ पृष्ठ संख्या - ३

४.cristal devid - the Cambridge University in psychlopedia of language, Cambridge University press 1998 page no. 287